आचार्यश्री महाप्रज्ञ का 90वां जन्म दिवस समारोह

मैं उस धर्म को स्वीकार करता हूं जो भगवान महावीर ने जीया : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

शांति और अहिंसा से ही देश एवं समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है

- मुख्यमंत्री गहलोत

लाडनूं, 21 जून।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने 90वें जन्म दिवस पर उपस्थित विशाल जनमेदनी को संबोधित करते हुए कहा कि मैं साफ कहूं कि मैं धर्म का आदमी हूं। और मैंने धर्म का जीवन जीया है जी रहा हूं, और जीने का है किन्तु मैं उस धर्म को स्वीकार करता हूं जिसका भगवान महावीर ने प्रतिपादन किया था और जिसकी व्याख्या आचार्य तुलसी ने की थी। वह धर्म जिसकी पृष्ठभूमि में नैतिकता, नैतिकता को संपोशण है जिसका शिखर अध्यात्म है और बीच में धर्म है मैं उस धर्म को स्वीकार करता हूं जिसकी पृष्ठभूमि में नैतिकता नहीं और अध्यात्म नहीं उस धर्म को दूर से ही नमस्कार करता हूं। कोई मतलब नहीं आचार्य तुलसी ने जब अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया एक बड़ी सच्चाई को सामने रखा कि यह नैतिकता शून्य धर्म चल रहे हैं ये धर्म के नाम पर दुनिया को धोखा दे रहे हैं और दुनिया को भ्रश्ट कर रहे हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि मैंने धर्म को स्वीकार किया है उससे मुझे शारीरिक स्वास्थ्य मानसिक स्वास्थ्य मिला है और सबसे बड़ी बात भावात्मक स्वास्थ्य मिला है अपने इमोशन पर कंट्रोल करने की शक्ति मिली और मैंने जो विनम्र व्यवहार किया और इस अहंकार को दूर रखा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि सभी धर्मों के लोग आए हैं मैं सबसे यह कहना चाहता हूं कि जो अहिंसा भवन बना है वह सब आप लोगों के लिए ही बना है कि यहां हम सब बैठकर अहिंसा का एक ऐसा अंतर्राश्ट्रीय नेटवर्क बनाएं जिससे हम अपनी समस्या सुलझा सकें, समाज और राष्ट्र की समस्या सुलझा सकें और अंतर्राष्ट्रीय जगत को कोई मार्गदर्शन दे सकें अगर इस रूप में जन्म दिन मनाएं और मेरी भावना को समझें तो मैं सबके प्रति मंगल भावना करता हूं, अपने प्रति भी मंगल भावना करता हूं कि सबमें धर्म की शक्ति बढती जाए और समाज की समस्या को सुलझाने में हमारी शक्ति का उपयोग होता रहे।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा है कि शांति और अहिंसा से ही देश एवं समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने कहा कि मन, वचन और कर्म से किसी का भी दिल नहीं दुखाना चाहिये। यह अंहिसा की श्रेणी में आता है। मुख्यमंत्री रविवार को नागौर जिले के लाडनूं में जैन विश्व भारती परिसर के सुधर्मा सभागार में आचार्य श्री महाप्रज्ञ के 90 वें जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि सत्य के मार्ग पर चलने से ही सभी समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाता है। उन्होंने कहाकि आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अंहिसा को लेकर 80 साल तक देश की जो लम्बी यात्रा करके मार्ग-दर्शन दिया है, उससे आने वाली पीढ़ियां प्रेरणा पाकर आगे बढ़ेंगी। उन्होंने कहाकि 10 साल की आयु में जैन मुनि बनना कोई मामूली बात नहीं है। उन्होंने कहाकि ऐसे बहुत कम लोग देखने को मिलते हैं जो जीवन पर्यन्त त्याग और तपस्या के बल पर युवा पीढी को नई रोशनी

दिखाने का मार्ग दिखाते हैं। उन्होंने कहाकि आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने देश को बहुत कुछ दिया है। उन्होंने महाप्रज्ञ के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करते हुए कहा कि महापुरूषों, महामनाओं, संतो और महात्माओं एवं औलियाओं के जीवन-दर्शन का प्रताप ही है कि देश दिनों दिन तरक्की कर रहा है। हमें चाहिये कि हम सभी धर्मो का समान रूपसे आदर और सम्मान करें। इन सतों ने हमेशा शाति, अहिंसा और प्रेम का संन्देश दिया है, जिससे लोगों को अच्छे संस्कार भी मिले हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने जब-जब भी संत मुनि एवं महात्माओं का सानिध्य प्राप्त किया है, मुझे सुख की अनुभूति हुई है और उनके विचारों को आगे बढ़ाने का प्रयास भी किया है। मनुष्य का जीवन सुखमय और सात्विक होना चाहिये। उन्होंने कहाकि आचार्य महाप्रज्ञ ने 90 साल की आयु में भी उनकी वाणी में युवाओं जैसा जोश और शक्ति है और वे आज भी उसी रफ्तार से अपनी औजस्वी वाणी से खुशी का पैगाम दे रहे हैं। उन्होंने कहाकि वाणी से बहुत कुछ मिलता है। उन्होंने आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सली ताकतों की निन्दा करते हुए लोगों का आव्हान किया कि हमें ऐसे लोगों के इरादों को नेस्तनाबूद करना होगा, तभी हम राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बनाये रख सकेंगे एवं देश मे आपसी भाई-चारा और अमनचैन भी कामय कर सकेंगे। उन्होंने कहाकि सत्य के मार्ग पर चलने से सभी समस्याओं का स्थाई समाधान होता है। उन्होंने महात्मा गांधी के जीवन को उदृत करते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने भगवान महावीर के अंहिसा के सिद्वान्त को हथियार बनाकर अंग्रेजों को यहां से भगाया था। इस बात का लोहा आज सभी मानते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहाकि धर्म और जाति के नाम पर होने वाले दंगों को सख्ती से रोकना होगा और समर्पण व प्रतिबद्वता की भावना से सबको मिलकर एकता और भाईचारे का सन्देश देने की पहल करनी होगी। हमें यह सन्देश गांव-गांव, ढाणी-ढाणी व जन-जन तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार संवेदनशीलता एवं पारदर्शिता के साथ विकास के लिए सकल्पित भावना से जुट गई है और हमने जनता से जो वायदे किये हैं, उन्हें पूरा करके दिखायेंगे। उन्होंने कहाकि राज्य हरा-भरा हो और राजस्थान हरित-राजास्थान बनें। इसके लिए हम सबको अधिकाधिक वृक्ष लगाकर प्रदेश को हरा-भरा बनाना है। राज्य में अधिक पेड़ लगेंगे तो प्रदेश खुशहाल बन पायेगा। उन्होंने शुद्ध के लिए युद्ध अभियान की जानकारी देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ से आर्शिवाद चाहा कि हम राजस्थान को और अधिक ऊंचाईयों तक पहुंचा सकें। उन्होंने कहाकि लाडनूं के जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की विशेष पहचान है, जिसे विदेशों में भी जाना पहचाना जाता है। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के सन्देश को आत्मसात करने की बात भी कही।

युवाचार्य महाश्रमण ने ढाई सौ वर्ष के तेरापंथ धर्म के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ पहले आचार्य हैं, जिन्होंने इस धर्म में 90 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद भी हमें प्रेरणा दे रहे हैं।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने राजनीतिक लोगों के दायित्वों पर पूर्व पालिकाध्यक्ष एवं आचार्य महाप्रज्ञ चातुमार्स व्यवस्था समिति के मंत्री श्री बच्छराज नाहटा ने सबका स्वागत किया। बौध धर्म के भदंत राहुल बोधि, ईसाई धर्म के फादर माईकल रोजारियो, इस्लाम धर्म के मो. असलम गाझी एवं सनातन धर्म के स्वामी रामनिवास महाराज ने आचार्यप्रवर के जन्म दिवस पर अहिंसा के क्षेत्र में व्यापक कार्य करने का संकप व्यक्त किया। मुनि महेन्द्र कुमान ने आचार्यश्री के जन्म दिवस पर दिल्ली मुख्यमंत्री शिला दीक्षित एवं बोहरा समुदाय के गुरु मो. सैयदना साहब के संदेश को वाचन

किया। साध्वी मार्दवश्री ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। मुनि महावीर कुमार, स्थानीय तेरापंथ कन्यामण्डल, सप्तम राष्ट्रीय तेरापंथ कन्या मण्डल के अधिवेशन में समागत कन्याओं, मुंबई तेरापंथ महिला मण्डल एवं सीमा मिश्रा ने गीतों के द्वारा ने गीतों के द्वारा भावाभिव्यक्ति दी। समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने विचार रखे।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार चौरड़िया ने संस्थागत जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया और आचार्य महाप्रज्ञ के स्वस्थ्य एवं खुशहाल जीवन की मंगल कामना की।

समारोह में कृषि एवं पशुपालन मंत्री हरजीराम बुरड़क, नागौर की सांसद डॉ0 ज्योति मिर्धा, डीडवाना विधायक रूपाराम डूडी, नावां विधायक महेन्द्र चौधरी, जायल विधायक श्रीमती मंजू मेघवाल, मुनि महेन्द्र कुमार, रामनिवास महाराज, सम्भागीय आयुक्त अतुल शर्मा, पुलिस महानिरीक्षक आर.पी. सिंह, जिला कलक्टर रोहित कुमार, अतिरिक्त जिला कलक्टर रामावतार मीणा, अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक श्री दिलीप जाखड़, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डीडवाना रिसाल सिंह, उप अधीक्षक प्रतापसिंह सेवदा, उपखण्ड मजिस्ट्रेट नारायणलाल रेवाड़, महेशनारायण शर्मा, दलवीरसिंह ढ़ूढ़ढा, बिहारीलाल मीणा व सहायक कलक्टर गिरवरसिंह देवल सहित बड़ी संख्या में प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी, जन प्रतिनिधि और शहर के गणमान्य नागरिक तथा जैन धर्म के अनुयायी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत ने किया।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की जैन विश्व भारती परिसर में बने अस्थाई हैलीपेड पर कृषि मंत्री हरजीराम बुरड़क व सांसद डॉ0 ज्योति मिर्धा, सम्भागीय आयुक्त, पुलिस महानिरीक्षक, जिला कलक्टर एवं कार्यवाहक जिला पुलिस अधीक्षक तथा जैन विश्व भारती के प्रतितिधियों, जन प्रतिनिधियों ने अगवानी करके मुख्यमंत्री का भावभीना स्वागत किया।

--

आचार्य महाप्रज्ञ के 90वें जन्म दिवस पर गूंजी स्वर लहरियां

धरती पर कभी-कभी महामानव आते हैं

लाडनूं, 21 जून।

बालक जन्म की सूचना देता थाली वादन, ब्रह्म मूर्हत्त में गुंजती मंगल गीतों की स्वर लहरियां, महापुरुष के अवतार का अहसास करता शंखनाद यह अवसर था तेरापंथ के दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 90वें जन्मदिवस के मंगल प्रभात का। आचार्य प्रवर की जन्मभूमि टमकोर एवं देश के कोने-कोने से पहुंचे श्रद्धालुओं में जन्म दिवस पर सबसे पहले मंगल कामनाएं देने का उत्साह देखते ही बन रहा था। जैन विश्व भारती नव निर्मित अहिंसा भवन में प्रातः 4 बजे पूर्व ही लोगों का हजुम लग गया। जैसे ही आचार्य महाप्रज्ञ ने भीतर की यात्रा सम्पन्न कर श्रद्धालुओं को दर्शन दिये वैसे ही चारों ओर मंगल गीतों, शंखनाद एवं थाली वादन की स्वर लहरियां गुंजने लगी। संसार पक्षिय परिवार, लाडनूं तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कमलजी बैद, कमलजी नाहटा एवं अनेक जनों ने अपनी भावनाएं श्री चरणों में रखी। अमृतवाणी ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालने वाली वीडियो फिल्म प्रदर्शित की।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने ''प्रज्ञा अवतार शासन शेखर लो शत शत वंदन'' गीत के द्वारा सम्पूर्ण साधु समुदाय की तरफ से मंगल कामनाएं अभिव्यक्त की। मुनि श्रेयांस कुमार, मुनि दिनेशकुमार आदि मुनिवृंदों ने गीतों की प्रस्तुति दी।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि तैजस्वी व्यक्तित्व के साथ जुड़ने के कारण सामान्य दिन का भी महत्त्व बढ़ जाता है। आचार्यप्रवर के जन्म से जुड़ने के कारण औष्ण पक्ष को त्रयोदशी का महत्त्व बढ़ चुका है। युवाचार्यवर ने आगे निरंतर स्वस्थ रहे एवं मानवता को त्राण देने का प्रयास करते रहने की मंगल कामना प्रस्तुत की।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने 90वें जन्मदिन पर प्रथम उद्‌बोधन में फरमाया कि मुझे भाग्य का विशेश मिला जिससे तेरापंथ जैसे शक्तिशाली धर्मसंघ से जुड़ने का अवसर मिला और आचार्य कालुगणी जैसे महान गुरु पवित्र हाथ सिर पर टिका। आचार्य प्रवर ने आचार्य तुलसी के मिले सान्निध्य का उल्लेख करते हुए फरमाया कि आचार्य तुलसी के पदचिन्हों का अनुसरण करूंगा इस संकल्प ने मुझे सफलता प्रदान की। आचार्यश्री ने फरमाया कि युवाचार्य महाश्रमण का योग, विनीति साधु-साध्वी समुदाय के कारण से कोई कठिनाई का अनुभव नहीं होता। यह तेरापंथ की कुंडली का योग है। तेरापंथ को जितना आज्ञाकारी श्रावक समाज मिला है उतना और किसी को नहीं मिले यह कठिन है।

सूर्योदय के पश्चात साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के नेतृत्व में पहुंची साध्वी समाज, समणीगण ने 90वें जन्म दिवस पर अपनी अभ्यर्थना प्रस्तुत की। मुनि जयंत कुमार ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मुनि जबूं कुमार, मुनिवृंद ने गीतों के द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किये। साध्वी कमलश्री ने विचार रखे।

अपने अपने अन्दाज में दिये उपहार

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 90वें जन्म दिवस पर अनेक श्रावकों ने विभिन्न प्रकार के उपहार श्री चरणों में भेंट किये। उनमें गुवाहाटी प्रवासी श्री बिमलकुमार नाहटा ने नये अन्दाज में सजाई गई तस्वीर एवं 90वें जन्म दिवस की परिकल्पना में बारहव्रती श्रावकों में 90 जनों के फार्म श्री चरणों में प्रस्तुत किये।

मुंबई प्रवासित राखी बैद ने स्वयं द्वारा कैनवास पर चित्रित आचार्य महाप्रज्ञ के चित्र को भेंट किया। मिंजल कोठारी, हीना चपलोत, विमला कोठारी ने मुंबई तेरापंथ कन्यामण्डल के 91 उपासिका संकल्प पत्र समर्पित किये। सम्पतजी बच्छावत ने युवाचार्यश्री महाश्रमण की औति ''महात्मा महाप्रज्ञ'' की 2 हजार प्रतियां जनता को उपलब्ध करवाई।

हस्तलिखित पाण्डुलिपियां हुई समर्पित

मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' ने अपने द्वारा हस्तलिखित पाण्डुलिपियां आचार्यश्री के जन्म दिवस पर समर्पित की। जिनमें आचारांग भाष्य के 51 पन्ने, आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा निर्मित खण्डमहाकाव्य 'ऋषभायण' के 25 पन्ने, कल्पसूत्र के 25 पन्नों में थे। इन पाण्डुलिपियों की सुन्दर लिखावट एवं डॉ. मंजू नाहटा द्वारा निर्मित चित्रों को देख आश्चर्य चकित हुए बगैर नहीं रह सकते इस मौके पर साध्सी विमलप्रज्ञा ने अहिंसा यात्रा अरावली के शिखर पर 'औति' के दो भाग आचार्यवर को समर्पित

किये। महाप्रज्ञ ने कहा का 33वां भाग महेन्द्र चन्द सुराणा ने भेंट किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिशद के राश्ट्रीय अध्यक्ष श्री मर्यादा कोठारी ने तेरापंथ टाईम्स के कार्यकारी सम्पादक श्री प्रमोद घोड़ावत ने ''प्रज्ञा दिवस विशेशांक'' भेंट किया।